ISSN : 2229-7227

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Year : 9
Issue : 34
April-June 2019
www.chintanresearchjournal.com
Impact Factor : 4.012

International Refereed

चिन्तन Chintan

रिसर्च जर्नल Research Journal

(कला, साहित्य, मानविकी, समाज–विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर केंद्रित)

(Indexed & Listed at : Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest . U.S.A.)
(Indexed & Listed at : Copernicus, Poland)
(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)
(UGC Approved List No. 41243)

संपादक

आचार्य (डॉ.) शीलक राम

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्

आचार्य अकादमी
भारत
ISO 9001:2008

International Refereed
UGC List No.41243
Impact Factor : 4.012

'चिन्तन' अन्तरराष्ट्रीय रिसर्च जर्नल (ISSN : 2229-7227)
वर्ष 8, अंक 31(II) (पृ.सं. 28 33)
विक्रमी सम्वत: 2076 (जुलाई सितम्बर 2018)

थानेसर (प्राचीन स्थाण्वीश्वर) का ऐतिहासिक व पुरातात्विक अध्ययन

गौरव गोयल
प्राचीन भारतीय इतिहास
संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
आर०के०एस०डी० कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

शोध-आलेख सार

थानेसर से 22 की दूरी पर दौलतपुर के उत्खनन से चौथी पांचवी शती. ई. की ब्राह्मी लिपि में पक्की मिट्टी की एक सील पर स्थाणेश्वरस्य लिखा है। जोकि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पुरातत्व संग्रहालय में सुरक्षित है। इससे थानेसर की ऐतिहासिकता सिद्ध होती है। हवेनसांग के यात्रा विवरण में इस का नामोल्लेख स-त-नी-शी-फ-लो के रुप में हुआ है। हर्षचरित से तो यह स्पष्ट विदित होता है कि सरस्वती के किनारे श्री कण्ठजनपद की राजधानी स्थाण्वीश्वर थी। बृहत्स्वयंभू पुराण स्थाणीश्वर को श्री कण्ठजनपद से सम्बन्धित बताते है। आर्यमंजुश्री मूलकरूप से भी श्री कण्ठजनपद का पता चलता है। थानेसर का विवरण मुस्लिम इतिहासकारों, अलबरूनी उत्बी और फरिश्ता ने भी दिया है। मुगलकाल में इस स्थान की महता को दर्शाते हुए कुछ भव्य स्मारक शेख चेहली का मकबरा, मदरसा और मस्जिद यहां आज भी विद्यमान है। प्राचीन टीले अधिकांश भाग पर विद्यमान आधुनिक बस्ती से विगत दो-तीन शताब्दियों का इतिहास आसानी से निर्धारित किया जा सकता है ।

मुख्य-शब्द : गुप्त काल, पालिशयुक्त विशिष्ट मृदभांड, गुप्तोत्तर काल ।

भूमिका

महाजनपदों के काल से भारतीय नगर जीवन के इतिहास में युगान्तर का प्रवर्तन होता है। भारतीय नगर जीवन में यह परिवर्तन राजनीतिक, सामाजिक, एवं आर्थिक परिस्थितियों के कारण सम्भव हुआ। दसवीं शताब्दी तक भारतवर्ष के अनेक नगरों का आर्विभाव हुआ ये नगर बहुत ही विशाल थे। भारतीय संस्कृति का उद्भव और आध्यात्मिक चिंतन का प्राचीनतम केन्द्र होने के कारण कुरुक्षेत्र का उल्लेख भारतीय साहित्य में सांस्कृतिक तथा धार्मिक महत्व के केन्द्र के रूप में तो मिलता है किन्तु यहां के ऐतिहासिक स्थलों और नगरों का विवरण बहुत कम मिलता है।

किसी भी नगर का प्रथम विवरण उस काल में मिलता है जब थानेसर (प्राचीन स्थाण्वीश्वर) उत्तरी भारत के एक विशाल साम्राज्य की राजधानी बन चुका था। पुष्यभूति वंश के राजाओं के काल में इस राजधानी का बाणभट्ट एवं विदेशी यात्री द्वारा विवरण प्रस्तुत करना स्वाभाविक ही है।